International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों के मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन

राकेश कुमार
शोधछात्र
शिक्षक शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
कोटवाँ–जमुनीपुर–दुबावल, इलाहाबाद

Article Info
Volume 8, Issue 3
Page Number : 847-853

Publication Issue
May-June-2021

Article History
Accepted : 12 June 2021
Published : 20 June 2021

ABSTRACT

शीर्षक "माध्यमिक स्तर पर विद्यालय त्याज्यता का विद्यार्थियों के अभिभावक-सम्बन्ध पर प्रभाव का अध्ययन" है। अध्ययन को देखते हुए वर्णनात्मक कार्योत्तर विधि को अध्ययन के लिये उर्पयुक्त विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबाद द्वारा संचालित प्रयागराज जनपद में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 के समस्त विद्यार्थियों को माना गया है। माध्यमिक विद्यालयों से कुल 400 विद्यार्थियों (200 अध्ययनरत एवं 200 त्याज्य) एवं उनके अभिभावकों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि से किया गया है। प्रस्तुत परीक्षण का निर्माण प्रो0 मोहनचन्द्र जोशी द्वारा बुद्धि मापन के लिए किया गया गया था। शोधार्थी ने दो समूहो के मध्य तुलना करने के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया है। परिणाम विद्यालय त्याज विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अपेक्षा कम पायी गयी।

की–वर्ड – अध्ययनरत् एवं त्याज्य विद्यार्थी, मानसिक योग्यता, तुलना

भूमिका

शिक्षा जीवन की बुनियाद है और बच्चे उस नींव पर बनने वाली इमारत। आज का बच्चे कल का राष्ट्र निर्माता है। "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।" इस अभीष्ठ लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये विश्व स्तर पर आज इसमें सरकारी एवं गैर सरकारी कई संगठन कार्य कर रहे हैं। इसके बावजूद भी किसी राष्ट्र के लिए सबसे अधिक समस्या का विषय यह है कि अधिकांशतः बच्चे शिक्षा अवधि पूरी करने के पहले ही विद्यालय छोड़कर चले जाते है, जिसे विद्यालय त्याज्यता कहते है। कैम्ब्रिज ऐडवान्स लर्नर्स डिक्शनरी एवं ट्रीजरर्स के अनुसार, एक विद्यार्थी जब अपनी कक्षा की पढ़ाई पूरी किये बिना ही

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

विद्यालय जाना बन्द कर देता है, तो उसे त्याज्य बच्चे एवं यह प्रक्रिया त्याज्यता कहलाती है।" वीकीपीडिया इनसाइक्लोपीडिया के अनुसार, "त्याज्यता वह प्रक्रिया है, जिसमें बच्चे या तो किसी व्यावहारिक कारण या आवश्यकता या कार्य के कारण विद्यालय जाना बन्द कर दे।" जहाँ विश्व के लगभग कई राष्ट्र इस चुनौती से जूझ रहे हैं। वहाँ भारत के सामने भी विद्यालय त्याज्यता सम्बन्धी समस्या एक चुनौती है। भारत में विद्यालय त्याज्यता के कई कारण हैं- जैसे निर्धनता, बालश्रम, निर्जीव शैक्षिक पद्धति, शैक्षिक सुविधाओं का अभाव, बढ़ती हुई जनसंख्या एवं अभिभावकीय निरक्षरता आदि।

आरम्भ में बच्चे पहले सामाजिक सम्बन्ध घर में बनते हैं, इसलिए घर के लोगों का यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण योगदान होता है कि सामाजिक परिस्थितियों में बच्चे का रुख और व्यवहार क्या होगा। बच्चे भविष्य में जिन समूहों में प्रवेश करेगा, उनमें घुलने-मिलने की उत्सुकता और अपने को उनका स्वीकृत अंग समझने की भावना उसे परिवार से मिलनी चाहिए। यदि वह परिवार में स्वीकृत है तो यह भावना तब भी उसे अन्दर पैदा हो जाएगी जब वह किसी अन्य समूह में प्रवेश करेगा। जन्म लेने के बाद से ही प्राणी अनेक परिस्थितियों का सामना करता हुआ विकासोन्मुख समाज में आगे बढ़ता है। इस प्रक्रिया में वह अनुभव ग्रहण करता है, अनुभव ग्रहण करने की इस प्रक्रिया में उसकी शिक्षा निहित होती है। वास्तव में मनुष्य के जीवन में शिक्षा का वहीं स्थान होता है जो पेड़ पौधों के लिए कृषि का होता है। विद्याविहीन मनुष्य पशु के समान है। शिक्षा ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य मनुष्यत्व को प्राप्त करता है। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है कि "जिस प्रकार पत्थर का एक टुकड़ा शिल्पकार का स्पर्श पाकर चमक उठता है, ठीक उसी प्रकार बालक का व्यक्तित्व भी शिक्षा का सानिध्य पाकर चमक उठता है।"

मानसिक विकास का तात्पर्य मानसिक शक्तियों में वृद्धि से है। इसके अन्तर्गत संवेदनशीलता, प्रत्यक्षीकरण, प्रत्यय निर्माण, अवलोकन, ध्यान, स्मृति, कल्पना, चिन्तन तर्क, निर्णय, बुद्धि, भाषा, अधिगम आदि शक्तियाँ आती हैं। जन्म के समय शिशु का मस्तिष्क अपरिपक्व होता है। उसकी आयु में वृद्धि होती है, के साथ ही उसके मस्तिष्क का विकास होता जाता है। परिपक्वता तथा अधिगम के फलस्वरूप बच्चे का मानसिक विकास होता है। मानसिक विकास अर्थात् समझने की शक्ति, स्मरण शक्ति, कल्पना करने की शक्ति, तर्क करने की शक्ति तथा बुद्धि आदि के विकास को शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्वीकार किया जाता है। यद्यपि विकास की प्रक्रिया गर्भाधान के क्षण से प्रारम्भ हो जाती है तथा मृत्युपर्यन्त चलती है। जीन प्याजे (1970) के अनुसार, "जब 18 माह का एक बच्चा तीसरे वर्ष में पहुंचता है तो इस अवस्था को विकास का ज्ञानेन्द्रिय चरण कहते हैं। यह वह अवस्था है, जहां पर वस्तुओं को देखने, सोचने तथा समझने इत्यादि का प्रमाण खिलौनों व अन्य सरल उपकरणों के प्रयोग द्वारा समझने का प्रयास करता है।

माध्यमिक स्तर पर विद्यालय त्याज्यता का विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता तथा उनके अभिभावक सम्बन्धों पर पड़ने वाले प्रभाव के अध्ययन को जानने की जिज्ञासा ने द्वारा किए गये सर्वेक्षणों में यह पता चला है कि अब तक केवल प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा पर विद्वानों व शोधार्थियों द्वारा शोध की विषयवस्तु के रूप में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किए गये, किन्तु अधिकांश शोधकर्ताओं द्वारा यह जानने का कमतर प्रयास किया गया। माध्यमिक स्तर पर शिक्षा ग्रहण करने के लिये बच्चे विद्यालय जाते हैं जिससे बच्चे का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास

होता है। इसी विकास के फलस्वरूप बच्चे समाज में अपना स्थान स्थापित करते हैं। यदि बच्चे किसी कारणवश विद्यालय त्याग कर अन्य कार्यो में लग जाते हैं, तो उसके व्यक्तित्व के इन पहलुओं का विकास प्रभावित होता है। जिसके परिणामस्वरूप उस बच्चे का सामाजिक विकास, मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास एवं स्वयं के व्यक्तित्व विकास पूर्ण नहीं हो पाता है। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए इस शोध की संकल्पना की गई है।

शीर्षक

"माध्यमिक स्तर पर विद्यालय त्याज्यता का विद्यार्थियों के अभिभावक-सम्बन्ध पर प्रभाव का अध्ययन"

उद्देश्य

1. अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्रों के मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्राओं के मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों के मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्रों के मानसिक योग्यता में अन्तर होता है।
2. अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्राओं के मानसिक योग्यता में अन्तर होता है।
3. अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों के मानसिक योग्यता में अन्तर होता है।

शोध प्रविधि

अध्ययन को देखते हुए वर्णनात्मक कार्योत्तर विधि को अध्ययन के लिये उर्पयुक्त विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबाद द्वारा संचालित प्रयागराज जनपद में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 के समस्त विद्यार्थियों को माना गया है। माध्यमिक विद्यालयों से कुल 400 विद्यार्थियों (200 अध्ययनरत एवं 200 त्याज्य) एवं उनके अभिभावकों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि से किया गया है। प्रस्तुत परीक्षण का निर्माण प्रो0 मोहनचन्द्र जोशी द्वारा बुद्धि मापन के लिए किया गया गया था। शोधार्थी ने दो समूहो के मध्य तुलना करने के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्यता छात्रों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी संख्या-1

अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्रों की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं टी0 अनुपात

छात्र	संख्या	मध्यमान	मा0 विचलन	मानक त्रुटि	टी मान
अध्ययनरत	100	84.81	4.167	.417	13.665*
विद्यालय त्याज्य	100	76.44	4.489	.449	

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से यह ज्ञात है कि अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्रों की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित टी.मान 13.665 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है जिससे शून्य परिकल्पना ‘‘अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्रों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।" अस्वीकृत हो जाती है और शोध परिकल्पना ‘‘अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्रों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर होता है", स्वीकृत हो जाती है अर्थात् यह कहा जा सकता है कि अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्रों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर होता है। पूर्व में हुए शोध जैसे मेज फारवंज (1990) आदि से प्रस्तुत परिणाम की पुष्टि होती है कि अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्रों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर होता है जबकि कुछ शोध जैसे रथ (1990) आदि प्रस्तुत परिणाम के विपरीत परिणाम की पुष्टि करते है कि अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्रों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या 1 में मध्यमानों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि ‘‘अध्ययनरत छात्रों की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित मध्यमान 84.81 है तथा माध्यमिक स्तर के विद्यालय त्याज्य छात्रों की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित मध्यमान 76.44 है, इससे यह स्पष्ट होता है कि अध्ययनरत छात्रों की मानसिक योग्यता विद्यालय त्याज्य छात्रों की मानसिक योग्यता से अपेक्षाकृत अधिक होती है। अतः अध्ययनरत छात्रों मे अपनी मानसिक योग्यता के प्रति अधिक जागरुकता विद्यालय त्याज्य छात्रों की अपेक्षाकृत अधिक पायी जाती है जिसके कई कारण हो सकते है जैसे अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों का परिवेश, अध्ययन के प्रति रुचि, विद्यालय त्याज्य छात्राओं के परिवेश से होना।

2. अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्राओं की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी संख्या-2

अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्राओं की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं टी0 अनुपात

छात्र	संख्या	मध्यमान	मा0 विचलन	मानक त्रुटि	टी मान
अध्ययनरत	100	78.87	3.558	.356	15.647*
विद्यालय त्याज्य	100	71.51	3.076	.308	

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 2 के अवलोकन से यह ज्ञात है कि अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्राओं की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित टी.मान 15.647 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है जिससे शून्य परिकल्पना ‘‘अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्राओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।" अस्वीकृत हो जाती है और शोध परिकल्पना ‘‘अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्राओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर होता है", स्वीकृत हो जाती है अर्थात् यह कहा जा सकता है कि अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्राओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर होता है।

सारणी संख्या 2 में मध्यमानों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि ‘‘अध्ययनरत छात्राओं की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित मध्यमान 78.87 है तथा माध्यमिक स्तर के विद्यालय त्याज्य छात्राओं की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित मध्यमान 71.51 है, इससे यह स्पष्ट होता है कि अध्ययनरत

छात्राओं की मानसिक योग्यता विद्यालय त्याज्य छात्राओं की मानसिक योग्यता से अपेक्षाकृत अधिक होती है। अतः अध्ययनरत छात्राओं मे अपनी मानसिक योग्यता के प्रति अधिक जागरुकता विद्यालय त्याज्य छात्राओं की अपेक्षाकृत अधिक पायी जाती है जिसके कई कारण हो सकते है जैसे अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों का परिवेश, बौद्धिक परिपक्वता विद्यालय त्याज्य छात्राओं के परिवेश से होना।

3. अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों के मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी संख्या-3

अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन एवं टी0 अनुपात

छात्र	संख्या	मध्यमान	मा0 विचलन	मानक त्रुटि	टी मान
अध्ययनरत	200	81.84	4.879	.345	16.647*
विद्यालय त्याज्य	200	73.98	4.565	.323	

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 3 के अवलोकन से यह ज्ञात है कि अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित टी.मान 16.647 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है जिससे शून्य परिकल्पना ‘‘अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।" अस्वीकृत हो जाती है और शोध परिकल्पना ‘‘अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर होता है", स्वीकृत हो जाती है अर्थात् यह कहा जा सकता है कि अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर होता है।

सारणी संख्या 3 में मध्यमानों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि ‘‘अध्ययनरत विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित मध्यमान 81.84 है तथा माध्यमिक स्तर के विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता से सम्बन्धित मध्यमान 73.98 है, इससे यह स्पष्ट होता है कि अध्ययनरत विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता से अपेक्षाकृत अधिक होती है। अतः अध्ययनरत विद्यार्थियों मे अपनी मानसिक योग्यता के प्रति अधिक जागरुकता विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों की अपेक्षाकृत अधिक पायी जाती है जिसके कई कारण हो सकते है जैसे अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों का परिवेश, अध्ययन के प्रति रुचि, बौद्धिक परिपक्वता विद्यालय त्याज्य छात्राओं के परिवेश से होना।

निष्कर्ष

1. अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्रों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर होता है। अध्ययनरत छात्रों मे अपनी मानसिक योग्यता के प्रति अधिक जागरुकता विद्यालय त्याज्य छात्रों की अपेक्षाकृत अधिक पायी जाती है जिसके कई कारण हो सकते है।
2. अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य छात्राओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर होता है। अध्ययनरत छात्राओं की मानसिक योग्यता विद्यालय त्याज्य छात्राओं की मानसिक योग्यता से अपेक्षाकृत अधिक होती है।
3. अध्ययनरत एवं विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर होता है। अध्ययनरत विद्यार्थियों मे अपनी मानसिक योग्यता के प्रति अधिक जागरुकता विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों की अपेक्षाकृत अधिक पायी जाती है

उपरोक्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय त्याज विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अपेक्षा कम पायी गयी। पूर्व अध्ययनों में सिंह एवं सिंह (2018) ने अध्ययन में इंगित किया कि "मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के समग्र सन्तुलन का परिचायक है और इसे हमें व्यक्ति की ऐसी क्षमता के रूप में देखते हैं जो उसके व्यक्तिगत, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इच्छाओं एवं मानदण्डों को सन्तुलन स्थापित करता है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर के बालकों एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य की विमा भावनात्मक स्थिरता, समायोजन, स्वायतता, स्वधारणा तथा शैक्षिक उपलब्धि एक-दूसरे से भिन्न है।"

विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अपेक्षा कम पाया जाने का कारण उनका शिक्षा में रुचि न होने के कारण हो सकता है तथा कुछ विद्यार्थियों में शिक्षा में रुचि होने के बावजूद भौगोलिक कारण, सामाजिक-आर्थिक कारण, पारिवारिक कारण, विद्यालय का दूर होना तथा वित्तीय अड़चन, रोजगार में लिप्त होना, उम्र से पहले विवाह होना, गलत व्यवहार, अपराध में लिप्त होना, माता-पिता का कम पढ़ा लिखा होना आदि कारणों के कारण उनका शिक्षा त्याज्य कर देते हैं एवं उनका शिक्षा से दूर होने के कारण उनकी मानसिक योग्यता में कमी आने लगती है जबकि अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शिक्षा चलती रहती है एवं अपने शिक्षा के प्रति लगाव रखने के कारण वे मानसिक रूप से योग्य होते हैं। पूर्व अध्ययन में पालीवाल एवं पालीवाल (2018) ने अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया कि वर्तमान में भौतिकवाद की तरफ अग्रसर होने वाले किशोर बालकों की कैरियर सम्बन्धी समस्याओं से उनमें तनाव पैदा हो रही है जिसका प्रभाव किशोर बालकों के व्यक्तित्व गुण जिसमें मार्गदर्शन, उचित विवेक पूर्ण साहित्य, आध्यात्म, संतोषधन, धैर्य व साहस आदि को प्रभावित करता है जिससे वे समायोजित न होकर असमायोजित हो रहे हैं तथा गलत रास्तों पर भटक रहे हैं। सिंह, (2017) ने अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया कि "शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की बुद्धि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक सोच, रहन-सहन, शैक्षिक विचारधारा ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा अधिक प्रबल होता है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण, उनके रहन-सहन, आवासीय व्यवस्था, विद्यालय की दूरी आदि कारक प्रभावित करते हैं।" अतः परिणामतः कहा जा सकता है कि विद्यालय त्याज्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अपेक्षा कम होने लगती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अनुपम हजारा (2010). *स्टयूट्स ऑफ ड्राप आउट इन इण्डिया,* सोशल वेलफेयर बोर्ड, (सी द रेफरेन्स नं0 वन इन चैप्टर टू) न्यू देलही (अप्रैल)।
2. अनुपम हजारा, (2010). *ए स्टडी ऑफ ड्राप आउट रेट इन इण्डिया,* सोशल वेलफेयर बोर्ड, नई दिल्ली।
3. कौर, हरमिन्द्र एवं स्वामी, रजनीश कुमार (2017). युवाओं में मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन की समस्या, *पेरीफेक्स–इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च,* वॉ0 6, इश्शू–12, पृ0 358–259
4. कुकरेती, बी0आर0 एण्ड सक्सेना, एम0 (2004). ड्राप–आउट प्राबलम्स एमंग स्टूडेन्ट्स एट स्कूल लेवेल, *कुरुक्षेत्र,* 52(11). 26–30.
5. गुप्ता, निशा एवं प्रिया, बालेन्तिना (2017), रायबरेली जिले के शहरी/ग्रामीण अध्ययनरत् किशोरियों (14–17) की तार्किक योग्यता के विशेष सन्दर्भ में सामाजिक गृह विज्ञान अभिरुचि का अध्ययन, *रिमार्किंग एन एनालाइजेशन,* वॉ0 2, इश्शू–5, पृ0 12–15
6. पालीवाल, सी.पी. एवं पालीवाल, अनुराधा (2018). मानसिक अवस्थाएँ, समायोजन व प्रबन्धन वर्तमान सन्दर्भ में, *चेतना–इण्टरनेशनल एजुकेशन जर्नल,* ईयर–3, वॉ0 2, पृ0 32–35
7. सिंह एवं सिंह (2018). माध्यमिक स्तर के बालकों एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्पिलनरी रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट,* वॉ0 2, इश्शू–7, पृ0 80–85
8. सिंह (2017). रींवा जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च,* 3(9), पृ0 183–186
9. सिंह, श्याम एवं पारीक, किरण (2019). उच्च माध्यमिक स्तर पर नायक ए0 एकाकी विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन, *शृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका,* वॉ0 6, इश्शू–6, पृ0 121–124